ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर। सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर।
O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotees.

वर्ष 37, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 मार्च, 2014 से रविवार 9 मार्च, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 190वें जन्मदिवस के अवसर पर हुए अनेक कार्यक्रम

100 से अधिक स्थानों पर हुए यज्ञ, प्रवचन, साहित्य वितरण, प्रसाद वितरण एवं ऋषि लंगर के कार्यक्रम

आर्यसमाज के आजीवन सेवाव्रती (अविवाहित) कार्यकर्ताओं/विद्वानों के स्वयं तथा उनके माता-पिता के लिए 9 लाख का मैडिकल बीमा सभा द्वारा किया जाएगा – धर्मपाल आर्य

स्वाध्याय को जीवन का आधार बनाएं – डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्यजन आगे आने वाले समय में देश को मजबूत करने के लिए अपनी जिम्मेदारियों को निभाएं – ब्र. राजसिंह आर्य

संगठन को प्रेमभाव से और मजबूत करें – योगेश मुंजाल

विशेष सन्देश

1. **बच्चों का सम्मान :** आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बच्चों को अवश्य लेकर जाएं एवं 12 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों का मल्यार्पण कर स्वागत करें।
2. **पुस्तक विक्रेताओं का सम्मान :** आर्यसमाज के कार्यक्रमों में आने वाले साहित्य विक्रेताओं की सुविधा, सेवा एवं सम्मान का विशेष ध्यान रखें।
3. **बुजुर्गों का सम्मान :** आर्यसमाज के उत्सवों के अवसर पर 85 वर्ष से अधिक आयु वाले बुजुर्गों का सम्मान अवश्य करें।

महाशय धर्मपाल जी की ओर से दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों में आयोजित होंगे 12 नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

12 वर्ष से कम आयु के बच्चों का सभा की ओर से माल्यार्पण करके एवं कॉमिक्स देकर सम्मान

आर्यसमाज के वयोवृद्ध सदस्यों का माल्यार्पण, पीतवस्त्र, शाल एवं सम्मान पत्र द्वारा अभिनन्दन

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

पुस्तक विक्रेताओं सर्वश्री माधो सिंह एवं श्री रवि प्रकाश का सम्मान

वेद-स्वाध्याय

रथचक्र के समान भ्रमणशील लक्ष्मी

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्। ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्युप तिष्ठन्त रायः।। ऋग्वेद 10/117/5

अर्थ—*(तव्यान्)* धन-समृद्ध जन *(नाधमानाय)* भोजनादि मांगने वाले का *(पृणीयात् इत्)* अवश्य ही पालन भोजनादि से तृप्त करे *(द्राघीयांसम् पन्थाम्)* जीवन पथ का आगे तक विचार करे। *(रायः)* धन सम्पत्तियाँ आदि *(रथ्या चक्रा इव)* रथ के चक्रों पहियों की भाँति *(आवर्तन्ते उ हि)* घूमा ही करते हैं। ये *(अन्यम्-अन्यम् उपतिष्ठन्ते)* एक से दूसरे, तीसरे के पास आते-जाते रहते हैं।

धन की वृद्धि को जाने पर उसे दान करना ही श्रेष्ठ कर्म है। किसी ने कहा है- **पानी बाढ्यो नाव में घर में बाढ्यो दाम। दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम॥**

नाव में पानी आ जाने पर उसे दोनों हाथों से बाहर निकाल देना चाहिये अन्यथा वह डूब सकती है। इसी भाँति गृहस्वामी को घर में धन की वृद्धि हो जाने पर उसे विद्या, धर्म, परोपकार, वेदप्रचार, चिकित्सालय, अनाथालय एवं राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में दान कर देना चाहिये क्योंकि धन की तीन गतियाँ होती हैं।

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य। यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

दान, भोग, नाश, ये धन की तीन गतियाँ होती हैं जो न तो दान देता है, और न ही उसका उपभोग करता है, उसकी तीसरी गति अर्थात् नाश अवश्यंभावी है।

चत्वारो धनदायादा धर्माग्निनृप तस्करः। तेषां ज्येष्ठवमानेन त्रयः कुप्यन्ति बान्धवाः॥

धर्म, अग्नि, राजा और चोर-तस्कर ये धन के चार दावेदार हैं। जब यह धन ज्येष्ठ भ्राता अर्थात् धर्म में नहीं लगाया जाता तब अग्नि, राजा, तस्कर कुपित होकर व्यक्ति से धन छीन लेते हैं।

जो व्यक्ति धनवान् होकर न तो दान करता है और न ही उसका उपभोग अर्थात् परोपकार में व्यय करता है, वह धन उसका होने पर भी न होने के समान है। जैसे खेतों में हरिण आदि को भगाने के लिये तिनकों से बनाया पुरुषाकृति वाला पुरुष खेती की रक्षा दूसरे के लिये करता है। वह उसका भोक्ता नहीं है। इसलिये धनवानों को चाहिये कि जब कोई उसके पास याचक बन कुछ आर्थिक सहायता या आजीविका के साधन मांगने के लिये आये तो वह **पृणीयादिन्नाधमानाय** उस याचक को भोजन एवं अन्य वस्तुओं का दान कर उसका पालन करे। सभी दानों में अन्न का दान श्रेष्ठ है क्योंकि उससे व्यक्ति के प्राणों की रक्षा होती है। धनिक लोगों का यह भी कर्त्तव्य है कि वे निर्धन लोगों के लिये आजीविका के संसाधन जुटायें जिससे कोई बेरोजगार और भुखमरी का शिकार न बने।

जीवन बहुत लम्बा है। व्यक्ति को **द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्** जीवन पथ का आगे तक विचार करना चाहिये। पता नहीं आज जो राजा है, कल एक रंक बन जाये और कल तक जो निर्धन थे, वे लक्ष्मी के स्वामी हो जायें। दान देना मानो जीवन-यात्रा के लिये पाथेय [मार्ग के लिये भोजन] का संग्रह करना है। देने वाले को परमात्मा और भी देता है—

इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद्ददाति न स्वं मुषायति। भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्।। अथर्व० ४.२१.२

सब ऐश्वर्यों को देने वाला परमेश्वर यज्ञकर्ता, उपदेशक और शिक्षक को समीप होकर धन देता ही है। वह कुछ छिपाकर नहीं रखता। वह स्वयं भी तो सबसे बड़ा याज्ञिक है और हृदय में विराजित हुआ अधर्म से दूर रहने की प्रेरणा करता है। जो उसके इन कार्यों में सहयोगी बन दान देता है, लोगों को सन्मार्ग पर चलने के लिये उपदेश और वेद की शिक्षा प्रदान करता है, उसका साथ परमात्मा क्यों नहीं देगा। वह ऐसे व्यक्ति के धनभण्डार को बार-बार भरता रहता है और उसे अखण्ड धन [मोक्ष] का स्वामी बना देता है।

सब दिन समान नहीं होते **ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा** धन रथ के चक्र की भाँति भ्रमणशील है। **अन्यमन्यमुप तिष्ठन्ति रायः** ये एक-दूसरे के पास आते-जाते रहते हैं। 'भोज-प्रबन्ध' में राजा भोज के जीवन की एक घटना आती है—जो व्यक्ति संस्कृत की कोई अच्छी रचना लेकर राजा भोज के पास आता, वे उसे एक स्वर्ण मुद्रा देते थे प्रतिदिन लोगों की संख्या बढ़ती गई। महामन्त्री ने यह देख राजा के अपने महल से राजसभा में आने के मार्ग में श्लोकमयी भाषा में एक वाक्य लिखा—**आपदर्थे धनं रक्षेत्** हे राजन्! सेना, कर्मचारी, शत्रु का आक्रमण और अकाल जैसी स्थिति से सामना करने के लिये धन का संग्रह करना चाहिये। राजा भोज जब उस मार्ग से निकले तो महामन्त्री के वाक्य से आगे लिख दिया— **श्रीमतामापदः कुतः ?** हे महामन्त्री! जो श्रीमान् हैं उनके यहाँ ऐसी आपत्तियाँ आती ही नहीं हैं। आप चिन्ता न करें। अगले दिन मन्त्री ने निचली पंक्ति में लिखा—**सा चेदपगता लक्ष्मी** हे राजन्! यदि लक्ष्मी कदाचित् चली जाये तो क्या होगा? वह तो चञ्चला है, आज किसी के यहाँ तो कल दूसरे के यहाँ अपना आसन जमा लेती है। जब राजा वहीं से निकले तो चौथा चरण अनुष्टुप् छन्द का लिखा **सञ्चितार्थो विनश्यति**=सञ्चित धन का नाश ही होगा। जैसे तालाब का पानी एक स्थान पर सञ्चित हो जाने पर उसमें दुर्गन्ध उठने लगती है और कालान्तर में वह आगे जाकर सूख जाता है। उधर सदानीरा नदियाँ पहाड़ों से प्रवाहित हो हजारों मील की यात्रा कर भूमि की प्यास को बु ाती है और उनका जल गतिमान् रहने से सड़ने नहीं पाता। इसी भाँति जिस धन का दान किया जाता है उसका प्रवाह बना रहता है।

धन दान किये अरु भोग लिये,
नहीं सञ्चय में रहिये आठों घरी।
बली राजा विक्रमादित्य कर्ण की,
कीरति आजहुं ना बिसरी॥
न दीनो न भोग करो कछु भी यों,
कहती मनो मन दुखभरी।
मधुमक्खी गंवाय सबै मधु को,
दोऊं हाथ मले करे सोच परी॥

- क्रमशः

शिवभक्त! पहचानें कौन है मालामाल !!!

- आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

शिवरात्रि के देवता शिव विश्वनाथ हैं, यह लोक प्रसिद्ध विचार है। इस प्रसिद्धि के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में काशी का विश्वनाथ मन्दिर भी विद्यमान हैं। विश्वनाथ मन्दिर के विद्यमान रहते किसी को भ्रम या संदेह भी नहीं हो सकता? कि शिव विश्वनाथ हैं! या नहीं? क्योंकि विश्वनाथ मन्दिर में शिवलिंग जो प्रतिष्ठापित है।

शिवलिंगाधिष्ठित शिव की महिमा में शिव त्रिगुणातीत हैं, भावातीत हैं, कल्पातीत हैं, करुणेश्वर हैं, प्रलयंकर हैं, महेश्वर हैं आदि-2 कहा जाता है। इन महिमाओं के साथ शंकर मन्दिर, भोले बाबा मन्दिर, विश्वनाथ मन्दिर आदि मन्दिरों में प्रतिष्ठित शिव के लिए जहाँ यह प्रसिद्ध है कि शिव विश्वनाथ हैं, वहीं इन मन्दिरों के शिव के लिए लोक में, पुराण साहित्य में यह भी भली-भाँति प्रतिपादित है कि शिव ऐश्वर्यशाली हैं, पर यह ऐश्वर्य इनका नहीं, अपितु अन्न पूर्णा देवी द्वारा खैरात=याचना में मिला हुआ ऐश्वर्य है।

महेश्वर कहे जाने वाले शिव की ऐश्वर्य सम्बन्धी इस बदहाली=दुर्दशा एवं अन्नपूर्णा की खैरात=अन्न आदि ऐश्वर्य बाँटने की कथा पुराणों के महनीय पण्डित अपनी कथाओं में प्रायः बताते हैं एवं दूरदर्शन आदि में भी एतद् विषयक अपना वक्तव्य देते रहते हैं। उन पुराण पण्डितों की एतद् विषयक कथा का निचोड़ यह होता है कि ब्रह्मवैवर्त पुराण के काशी खण्ड में लिखा है कि एक प्रसंग में पार्वती जी शिव जी से रूठ गई, पुनः काशी में अन्नपूर्णा देवी के रूप में प्रकट हुई। काशी में प्रकटीभाव के कारण काशी में उनके नाम का अन्नपूर्णा मन्दिर भी है, जिसका बड़ा महत्त्व है। पण्डित यह भी बताते हैं कि शंकराचार्य जी जब प्रथम बार काशी में आये तब उन्होंने अन्नपूर्णा देवी का दर्शन किया एवं उस पार्वती देवी से अन्न की याचना भी की। आचार्य शंकर की भाँति महेश्वर शिव ने भी काशी जाकर अन्नपूर्णा देवी से अन्न की याचना की और उन्हें अन्नपूर्णा ने अन्न देकर उनकी क्षुधा को दूर किया। पुराण पण्डित अन्नपूर्णा की इस महिमा को बताते हुए जिन स्तोत्रों को पढ़ते हैं, वे स्तोत्र हैं-

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

विचित्रवसने देवि त्वन्नदानरतेऽनघे।
शिवनृत्यकृतामोदे अन्नपूर्णे नमोस्तु ते।।

अन्नपूर्णा द्वारा शिव जी को अन्न देने एवं अन्नपूर्णा देवी की यह महत्ता अभी इसी मास 7:2:2014 को समय 2 बजे जी न्यूज दूरदर्शन पर भी सुनी व देखी। दूरदर्शन पर अन्नपूर्णा देवी का एक चित्र दिखाया गया जिसमें एक हाथ में करछुल एवं दूसरे हाथ में एक पात्र था। एक चित्र ऐसा भी था, जिसमें शिव शंकर अपना हाथ पसारे हुए अन्नपूर्णा के पास खड़े हैं, अन्नपूर्णा करछुल से शिव के हाथ में अन्न दे रही हैं। जी न्यूज की प्रवक्त्री ने यह भी बताया कि अन्नपूर्णा देवी के हाथ में जो करछुल है वह सर्व रत्नों से निर्मित है, जिससे वे अन्न बाटती हैं। उनकी कृपा से कोई भूखा नहीं रहता।

आश्चर्य ही नहीं! महदाश्चर्य है। दुनियाँ भर में विश्वनाथ कहे जाने वाले शिवरात्रि के देव अन्न से खाली हैं!!! इससे स्पष्ट है कि विश्वनाथ शिव कोई और है, विश्वनाथ मन्दिर आदि मन्दिरों में प्रतिष्ठित शिव विश्वनाथ नहीं है।

विश्वनाथ संस्कृत का शब्द है। विश्वस्य नाथः विश्वनाथः। विश्वनाथ वह होता है, जो सम्पूर्ण जगत् का नाथ होता है। नाथृ याच्ञोपतापैश्वर्याशीः षुः धातु से सिद्ध नाथ शब्द है। नाथ शब्द स्वामी, रक्षक, पालक आदि अर्थों का वाचक है! इस प्रकार विश्वनाथ शब्द का अर्थ हुआ जो सम्पूर्ण जड़ चेतन जगत् का लालन पालन करता है, मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश का नियामक व्यवस्थापक होता है, अन्न, वृक्ष, वनौषधि, पर्वत आदि का उत्पादक धारक होता है, सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि का निर्माता होता है। जगत् के जितने भी ऐश्वर्य, शक्ति, आधिपत्य, धन, वैभव, बड़प्पन आदि हैं, उन सबका मूल होता है, वह विश्वनाथ कहा जाता है। तात्पर्य हुआ जो सर्वशक्तिसम्पन्न, धनाढ्य हो, भिक्षुक याचक न हो, वह विश्वनाथ कहने योग्य है।

भिक्षुक याचक से रहित विश्वनाथ तो वह निराकार, सर्वाधार ब्रह्म है, जिसके शिव, शंकर आदि नाम है, जिसका मुख्य नाम ओम् है। ओम् नाम की महिमा, वरिमा वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि सच्छास्त्रों में प्रतिपादित है। उस ओम् नाम में ही ईश्वर के विराट्, अग्नि, विश्व आदि नाम समाहित हैं। विश्व ओम् वाच्य परमात्मा का ही नाम है। परमात्मा का विश्व नाम क्यों हैं? क्योंकि वह अपनी सत्ता से सम्पूर्ण जगत् में रमा हुआ है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

इतिहास के पन्नों में
महर्षि का 170वां जन्मोत्सव
मंगलवार 8 मार्च, 1994

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

20 वर्ष पूर्व महामहिम राष्ट्रपति स्व. डॉ. शकर दयाल शर्मा जी द्वारा दिया गया भाषण

हमारे देश के अग्रणी चिंतक और महान् समाज-सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म-दिन पर आयोजित इस समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

दयानन्द सरस्वती जी ने जब सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था, तब देश में विदेशी हुकूमत थी। अंग्रेजी सत्ता ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आलोचना करके भारतीयों के मन में हीन भावना पैदा कर दी थी। वैसे भी चूंकि वे सत्ता में थे, और हम गुलाम थे, इसलिए हममें आत्माविश्वास की कमी आ गई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती का सबसे बड़ा योगदान मैं यह मानता हूँ कि उन्होंने उस समय भारतीयों के खोए हुए आत्म विश्वास को फिर से जागृत किया और उनकी सोयी हुई शक्ति को झकझोरा। उन्होंने 'वेदों की ओर लौट चलो' का नारा देकर यह बताया कि भारत की प्राचीन संस्कृति और चिंतन विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति और चिंतन में से एक हैं।

मुझे यह बात भी महत्त्वपूर्ण लगती है कि उन्होंने अपनी बात उपदेश-पद्धति के द्वारा ही नहीं, बल्कि वाद-विवाद और तर्क-वितर्क के द्वारा कही। इस बारे में उनकी शक्ति अद्भुत थी। उन्होंने लोगों को केवल आस्थावान नहीं बनाया बल्कि अपनी बात सप्रमाण कहकर ज्ञानवान बनाया। लोग प्रश्न पूछते थे, और वे उनका सप्रमाण उत्तर देते थे। चूंकि उनके उत्तर तर्क पर आधारित होते थे इसलिए लोगों पर उनका प्रभाव पड़ता था।

तर्क को वे ज्ञान का मुख्य आधार मानते थे। दिनांक 24 जुलाई, 1877 को बंबई में आर्य समाज के जो 10 मूल सिद्धांत बनाए गए थे, उनमें चौथा और पाँचवा सिद्धांत तर्क की प्रधानता वाले हैं। चौथे सिद्धांत के अंतर्गत कहा गया है-

"हमें हमेशा सत्य को स्वीकार करने तथा असत्य को अस्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

अगले नियम में कहा गया है-

"हमारे प्रत्येक कार्य सही एवं गलत का निर्णय करने के बाद धर्म के अनुकूल होने चाहिए।"

यहां तक कि उन्होंने ईश्वर पर भी विश्वास करने की बात नहीं कही बल्कि ज्ञान के आधार पर उसे जानने की बात कही। आर्य समाज के पहले नियम में उन्हों ने स्पष्ट रूप से कहा-

"ईश्वर उन सभी सच्चे ज्ञान और सभी वस्तुओं का आदि स्त्रोत है, जिन्हें ज्ञान द्वारा जाना जा सकता है।"

दयानन्द सरस्वती जी ने उस समय समाज की कुरीतियों, अंधविश्वासों और जड़ताओं के विरोध का जो बीड़ा उठाया, उसका भी मूल आधार तर्क ही था। स्वाभाविक है कि इसलिए उन्होंने शिक्षा पर बहुत अधिक जोर दिया। वे शिक्षा को व्यक्ति और राष्ट्र की उन्नति का आधार मानते थे। '**सत्यार्थ प्रकाश**' के तृतीय समुल्लास में हमें शिक्षा के बारे में उनके विचार जानने को मिलते हैं। उन्होंने तृतीय समुल्लास के आरंभ में ही लिखा है-

"संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और संबन्धियों का मुख्य कर्म है।"

उन्होंने यहां तक लिखा है-

राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाँचवे-आठवें वर्ष के आगे अपने लड़कों ओर लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दंडनीय हो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस 'आर्य समाज' की स्थापना की थी, उसका हमारे देश में शिक्षा के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुझे इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह लगती है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों के लिए शिक्षा की बात कहकर अपने समय के समाज में एक हलचल पैदा की थी। अभी मैंने जो उदाहरण दिया, उसमें उन्हों ने लड़कियों के लिए भी शिक्षा की बात कही है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने नारी-विकास के लिए अन्यी अनेक महत्वपूर्ण बातें कहीं। इनका उल्लेख 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता है। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा-

-लड़कियों को भी लड़कों के समान पढ़ाना चाहिए।

-प्रत्येक कन्या का अपने भाई के समान यज्ञोपवीत संस्कार होना चाहिए।

-लड़कियों का विवाह न तो बाल्यावस्था में हो, न ही उसकी इच्छा के विपरीत हो।

-पुत्री भी अपने भाई के समान दायभाग में अधिकारिणी हो।

- विधवा को भी विधुर के समान विवाह का अधिकार है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा-

"विवाह लड़के और लड़की की पसंद के बिना नहीं होना चाहिए क्योंकि एक-दूसरे की पसंद से विवाह होने से विरोध बहुत कम होता है और संतान उत्तम होती है।"

निश्चित रूप में आर्य समाज ने इस दिशा में महत्वपूर्ण काम किया। दयानन्द जी के इन प्रगतिशील विचारों का प्रभाव समाज पर पड़ने से धीरे-धीरे नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदला। यह बात अत्यन्त महत्त्व की है कि दयानन्द सरस्वती के निधन से पचास वर्ष से भी पहले बाल-विवाह को रोकने के लिए 'शारदा विवाह कानून' पारित हुआ। इसी प्रकार अन्तर्जातीय विवाहों को वैध घोषित करने के लिए 'आर्य विवाह कानून' भी पारित किया गया।

यदि वेदों का आश्रय लिया जाए और तर्क के आधार पर सोचा जाए तो मानव-मानव में कोई भेद मालूम नहीं पड़ता। वेदों में कहा गया है- **"एकैव मानुषि जाति"**। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी संपूर्ण मानव-जाति को एक मानते हुए, उनके आचारण को प्रधानता दी है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा-

"जो दुष्ट कर्मकारी-द्विज को श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्मकारी-शूद्र को नीच माने तो इससे परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।"

स्पष्ट है कि उनके लिए आचरण महत्त्वपूर्ण था, जन्म नहीं। वे धर्म को भी सीधे-सीधे आचारण से जोड़ते थे। उन्होंने धर्म से जुड़े सभी आडंबरों, पाखंडों और अंधविश्वासों का अपने तर्क के बल पर खण्डन किया और धर्म को सीधे-सीधे जीवन-व्यवहार का अंग बनाया। उन्होंने '**स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश**' के अनुच्छेद 3 में लिखा है- "जो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है, उसको धर्म..... मानता हूँ।"

इसी प्रकार "ऋग्वेदादिभाष्य" के पृष्ठ के 395 पर धर्म के लक्षण की चर्चा करते हुए वे लिखते है-

"सत्यभाषणांत् सत्याचरणाच्च परं धर्मं लक्षणं किञ्चिन्नास्त्येव"

अर्थात्, सत्य भाषण और सत्याचरण के अतिरिक्त धर्म का कोई दूसरा लक्षण नहीं है।

मैंने ये उद्धरण यहां इसलिए दिये हैं ताकि इस बात को अच्छी तरह से समझा जा सके कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का धर्म न तो किसी जाति, क्षेत्र और लोगों तक सीमित था, और न ही उसका संबंध किसी प्रकार की संकीर्णता और अव्यावहारिकता से था। उनके लिए धर्म व्यक्ति के आचरण का निर्माण करने वाला तत्त्व था। इसके साथ ही वह समाज का विधान करने वाली व्यवस्था थी। मैं समझता हूं कि दयानन्द सरस्वती के विचारों को इसी संदर्भ में समझा जाना चाहिए। विशेषकर एक ऐसे समय में जबकि निहित स्वार्थ धर्म की अपनी-अपनी दृष्टि से व्याख्या कर रहे हों, यह जरूरी हो जाता है कि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों के विचार लोगों के सामने रखे जाएं ताकि लोग धर्म के सच्चे स्वरूप को समझ सकें और उसके अनुकूल आचरण कर सकें।

यदि दयानन्द सरस्वती जी को स्वराज्य का प्रवक्ता कहा जाए तो गलत नहीं होगा। श्रीमती एनी बेसेंट ने 'इडिया ए नेशन' में बिल्कुल सही लिखा है-

"स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम धोषणा की कि भारत भारतीयों के लिए है।"

ठीक इसी प्रकार लोकमान्य तिलक ने उन्हें "स्वराज्य का प्रथम संदेशवाहक तथा मानवता का उपासक" कहा।

मातृभाषा, मातृसंस्कृति, मातृभूमि और मातृशक्ति के प्रति दयानन्द जी के मन में अगाध और गहरा लगाव था। वे स्वदेशी के समर्थक थे। उन्होंने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की बात कही थी। संस्कृत के प्रकांड विद्वान और गुजरातीभाषी होने के बावजूद उन्होंने लोगों की सुविधा की दृष्टि से अपनी बात हिन्दी में कही और 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी में लिखी। निश्चित रूप से इससे उस समय के भारतीयों की आत्म शक्ति जाग्रत हुई और उनका आत्मविश्वास बढ़ा। हमारे देश की सोई हुई शक्ति को उन्हों ने सक्रिय करके राष्ट्रीय आंदोलन तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रांति की दिशा में प्रेरित किया।

पण्डित नेहरू ने अपनी पुस्तक 'भारत एक खोज' में उन्हें बिल्कुल सही "विचारों की नयी प्रक्रिया शुरू करनेवाले चिंतकों में से एक" माना है। डॉ. राधाकृष्णन ने उनके कार्यों को "मूक क्रांति" का नाम दिया। मुझे इससे कोई दो मत नहीं मालूम पड़ते कि उन्होंने चिंतन में जिस दूरदृष्टि का परिचय दिया और जिन कार्यों की शुरुआत की, उसका हमारे देश पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। आज हम अपने सामने उन कार्यों की उपयुक्तता देख सकते हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि एक ऐसे समय में, जबकि एक नयी विश्व व्यवस्था उभर रही है, स्वदेशी की भावना की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। हम विश्व -व्यवस्था से अलग नहीं रह सकते। लेकिन हमें इस बात का भी संकल्प लेना होगा कि हम अपनी संस्कृति, अपनी जड़ों से भी अलग नहीं रह सकते। मैं समझता हूँ, कि दयानन्द सरस्वती जी के दर्शन का यह एक महत्त्वपूर्ण संदेश था और आज हमारे देश को इसे पूरे मनोयोग के साथ अपनाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि इस तरह के समारोह दयानन्द सरस्वती जी के जीवन-दर्शन को देश के लोगों तक पहुँचाने में सहायक होंगे।

बापू ने 'हरिजन' के 5 मई, 1932 के अंक में लिखा था-

"दयानन्द जी की आत्मा आज भी हमारे बीच काम कर रही है। वे आज उस समय से भी अधिक प्रभावशाली हैं, जबकि वे हमारे बीच सदेह थे।"

मैं आशा करता हूँ कि देश के लोग भी इसी तरह का अनुभव कर रहे होंगे। हमारे लोगों को ऐसे प्रगतिशील दृष्टिकोण वाले समाज की स्थापना के लिए काम करना है जिसमें कोई अशिक्षित नहीं होगा, कोई अस्पृश्य और छोटा-बड़ा नहीं होगा तथा जिसमें नारी के प्रति पूर्ण सम्मान का भाव होगा और यही इस महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विश्व पुस्तक मेला – 2014 (15 से 23 फरवरी) प्रगति मैदान में सम्पन्न

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार ने वैदिक साहित्य प्रेमियों में भरा उत्साह

लक्ष्य में सफलता के साथ हजारों घरों तक पहुंचा सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद

अन्य मतों के अनुयायियों में नजर आया सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदों के प्रति आकर्षण

(बाएं) पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश को प्रचारित करते महाशय धर्मपाल जी। सत्यार्थ प्रकाश को प्राप्त करने के लिए स्टाल पर लगी भीड़ व पुस्तकें देखते साहित्य प्रेमी

अंग्रेजी साहित्य प्रचार स्टाल पर भी लगी रही सहित्य प्रेमियों की भीड़। परोपकारिणी सभा का साहित्य समाप्त होने पर वहां भी सभा के कार्यकर्ताओं ने प्रचार किया।

पुस्तक मेले में साहित्य प्रचार के लिए विभिन्न स्थानों पर लगाए गए होर्डिंग एवं बैनर। खुले मैदान में भी कार्यकर्ताओं ने सत्यार्थ प्रकाश का किया प्रचार-प्रसार

(ऊपर) पुस्तकें ज्ञान का भण्डार होती हैं। उन्हें किसी धर्म के साथ नहीं बांधा जा सकता। सत्यार्थ प्रकाश को प्राप्त करने के लिए फार्म भरते पुस्तक प्रेमी। समस्त सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद के विषय में चर्चा करते मुस्लिम बन्धु एवं अन्य पुस्तकों को देखते पुस्तक प्रेमी।
(नीचे) सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रचार के लिए समय दान करने वाले बच्चों एवं युवा कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, श्रीमती विभा आर्या जी एवं अन्य।

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 190वें जन्मदिवस पर आयोजित ....

190वें जन्मोत्सव पर आयोजित भजन संध्या समारोह का शुभारम्भ आचार्य गणेश विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ।

उद्बोधन देते सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी, वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार जी, मुख्य अतिथि श्री योगेश मुंजाल जी।

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक का माल्यापर्ण कर स्वागत करत सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, मुख्य अतिथि श्री योगेश मुंजाल जी का स्वागत करते सभा मन्त्री श्री सरेशचन्द्र गुप्ता। समारोह में पधारे सनातन धर्म सभा दिल्लीके प्रधान एवं कोटद्वार से पधारे श्री विश्वपाल जयन्त जी का भी स्वागत किया गया। इस अवसर पर अपनी प्रस्तुति देते श्री भारतेन्दु जी।

(बाएं) भजन संध्या के अवसर पर अपनी प्रस्तुति देते श्री दिनेश पथिक जी एवं आर्यजनों से भरा पण्डाल

समारोह के अवसर पर 85 वर्ष से अधिक आयु के सदस्यों का सम्मान एवं आर्यसमाज के प्रधान श्री प्रियव्रत जी एवं मन्त्री श्री सहदेव नांगिया जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। चतर सिंह नागर जी

पृष्ठ 2 का शेष

विश्व शब्द का निर्वचन है-

1. विशन्ति प्रविष्टानि सर्वाणि आकाशादीनि भूतानि यस्मिन् स विश्व: ईश्वर:। अर्थात् जिसमें आकाशादि सभी भूत प्रवेश करते हैं, अत: वह ईश्वर विश्व हैं।

2. य: आकाशदिषु सर्वेषु भूतेषु प्रविष्ट: स विश्व: ईश्वर:।

अर्थात् जो आकाशादि सभी भूतों में, पदार्थों में प्रविष्ट है, अत: वह ईश्वर विश्व संज्ञा वाला है।

विश्व शब्द के निर्वचनों से स्पष्ट है कि जगन्नियन्ता, निराकार, सर्वेश्वर जगत् के कण-कण में विद्यमान है। उससे कोई भी कण खाली नहीं है। उस विश्वरूप ईश्वर की महिमा बताते हुए वेदों में कहा है- गर्भो यो अपां, गर्भो वनानां गर्भश्च स्थातां, गर्भश्चरथाम्। अद्रौ चिदस्मा, अन्तर्दुरोणे विशां ने विश्वो, अमृत: स्वाधी:।।

ऋ० 1/70/2

अर्थात् यह अपां गर्भ:=जो प्राण व जल के, गर्भ:=अनर्थ को दूर करता है द्धगिरत्यनर्थानिति वा गर्भ:(निरु. 10/2/23) वनानां गर्भ:=सेवनीय पदार्थों, रश्मियों की विकृति निवारक है, च स्थातां गर्भ:=और स्थावर पदार्थों का रक्षक है, चरथाम्=गति करने वाले पदार्थों का पोषक है, चित् अद्रौ=और सुदृढ़ शिला आदि सघन पदार्थों में, अस्मै=जगत् के लिए, अन्त:=मध्य में, दुरोणे=गृह में, विशां न=प्रजाओं के समान वह आप, अमृत:=अविनाशी, अनुत्पन्न, स्वाधी:=सर्व पदार्थों की धारक शक्ति के द्वारा, विश्व:=प्रविष्ट है।

मन्त्र का भाव है कि वह विश्वरूप परमेश्वर समस्त जड़ चेतन पदार्थों का धारक, रक्षक, पालक, उत्पादक है। वह ही इन सब पदार्थों का स्वामी है, अधिपति है, सबका नायक है, अत: वह विश्व है, विश्वपति है, विश्वनाथ है।

जो विश्वनाथ है, वह अन्नपति भी है। उसके अन्नपति होने में कोई सन्देह नहीं, उसे किसी से अन्न माँगने की आवश्यकता भी नहीं, वह अन्न का स्वामी है। अन्न बनाने वाला है। अन्न देने वाला भी वही है, उसी अन्नपति से अन्न की याचना भी की जाती है। मन्त्र है-

अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण:। प्रप्र दातारं तारिष ऊर्ज नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।। यजु. 11/83

अर्थात् हे अन्नपते!=अन्न के स्वामी, न:=हमारे लिए, अनमीवस्य, शुष्मिण: = रोगरहित, सुखकारक, बहुत बलकारक (शुष्ममिति बलनाम निघ0 2/9), अन्नस्य देहि=अन्न को दीजिये, और मुझ, प्रप्र=प्रकर्षरूप से, दातारम्=अन्न को देने वाले को, तारिष:=तृप्त करें, अन्न द्वारा, द्विपदे चतुष्पदे=दो पैर वाले मनुश्य आदि तथा चार पैर वाले गौ आदि पशुओं में, ऊर्जम्=ऊर्जा व पराक्रम को, धेहि=धारण करावें।

मन्त्र से सुस्पष्ट है निराकार ईश्वर अन्नपति है, वही अन्न का देने वाला है वह ही अन्न में रस डालने वाला है। वह अन्न से खाली नहीं है, वह अन्न का भिक्षुक याचक नहीं है, वह तो अन्न का दाता है।

इतना ही नहीं जहाँ वह ईश्वर अन्नपति है, वहीं वह अन्न स्वरूप भी है। अन्नस्वरूप का तात्पर्य है-

अनिति जीवयतीति अन्नम्।

अर्थात् जो अन प्राणने=प्राण धारण कराता है, वह अन्न कहा जाता है। ईश्वर प्राण धारण कराता है, अत: ईश्वर अन्न स्वरुप है। गोधूम, यव, मुद्ग आदि पदार्थ भी अन्न कहे जाते हैं, क्योंकि वे भी प्राण धारण कराते हैं। अन्नम् हि प्राणा: ज्ञात.ब्रा. 2/2/1/6। इस प्रकार स्पष्ट है प्राण धारण कराने से ईश्वर अन्न रूप है।

अन्न शब्द जैसे अन प्राणने धातु से बनता है, वैसे ही अद भक्षणे धातु से भी अन्न शब्द सिद्ध होता है। ईश्वर जैसे प्राण धारण कराने के कारण अन्न नाम से कहा जाता है, वैसे ही ईश्वर अन्न इसलिए भी कहाता है, क्योंकि वह प्रलय रूप में सम्पूर्ण जगत् को खा लेता है, संहार कर देता है। उपनिषद् में कहा है-

अन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते। अद्यतेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते।। तैति. उपनि. 2/2

अर्थात् अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न हुए अन्न से वृद्धि को प्राप्त होते हैं। अन्न खाया जाता है और वह खाया जाता हुआ भूतों को खा लेता है। अत: यह ईश्वर अन्न कहा जाता है।

तात्पर्य हुआ जो अन्नपति है, शिव है, विश्वनाथ है, अन्नरूप है, जो उपासकों द्वारा उपासना रूप में, समाधि में खाया जाता है, गहण किया जाता है। भूतों को उत्पन्न करता है, बढ़ाता है, वह अन्न रूप अन्नपति अन्त में अत्ति=भूतों को खाता भी है, अर्थात् प्रलय में समाहित भी कर देता है। इसीलिए अन्नरूप परमात्मा का मिलता जुलता एक नाम अन्नाद भी है। अथर्व मन्त्र है-

यो अन्नादो अन्नपतिर्बभूव ब्रह्मणस्पतिरुत य:। भूतों भविष्यद् भुवनस्य यस्पति:।। अथर्व. 13/3/7

अर्थात् य:=जो, अन्नाद=चराचर का ध्वंसक, अन्नपति:=अन्नों का स्वामी, उत=और, य:=जो, ब्रह्मणस्पति:=वेदज्ञान व सर्वज्ञानों का स्वामी, बभूव=है, था, होगा, य:=जो, भुवनस्य, पति:=उत्पन्न हुए जगत् का स्वामी है, वही भूत:=पहले था, वह वही आगे भी, भविष्यत्=रहेगा।

मन्त्र का निष्कर्ष है कि परमेश्वर जहाँ अन्न है, प्राण धारण कराने वाला है वहीं वह अन्नाद है। समस्त जड़ चेतन जगत् का लय प्रलय करने वाला है। वह ही हमारे काल विभाग की दृष्टि से वर्तमान, भूत, भविष्यत् तीनों कालों का स्वामी है, अधिपति है। उसकी व्यवस्था से कोई भी पाप, अधर्म आदि करने वाला बच नहीं सकता।

फाल्गुन मास के इस शिवरात्रि पर्व पर वर्षो पूर्व परमेश्वर के इस अन्नाद रूप को बखूबी=पूर्णरूपेण जानने समझने का प्रयास व प्रण सर्व प्रथम गुजरात के टंकारा ग्राम में उत्पन्न मूलशंकर महर्षि दयानन्द ने किया था। महर्षि ने प्रण मात्र ही नहीं किया था, वे उसमें सफल भी हुए।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के अनेक गुण, कर्म, स्वभावों का विश्लेषण 101 नामों के माध्यम से अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में किया है। उन ईश्वर नामों के मध्य ईश्वर के अन्नस्वरूप=अन्नाद रूप को भी व्याख्यात किया है।

यथा- अद, भक्षणे इस धातु से अन्न शब्द सिद्ध होता है। अद्यतेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते।तै. उप. 2/2

अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्। अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नाद:। तै. उप. 3/10

अत्ता चराऽचरग्रहणात्।

वेदा. द. 1/2/3 यह व्याससमुनिकृत शारीरिक सूत्र है।

जो सबको भीतर रखने, सबको ग्रहण करने योग्य चराचर जगत् का ग्रहण करने वाला है, इससे ईश्वर के 'अन्न" अन्नाद' और 'अत्ता' नाम हैं। और जो इसमें 3 बार पाठ है सो आदर के लिए है। जैसे गूलर के फल में कृमि उत्पन्न होके उसी में रहते और नष्ट हो जाते हैं वैसे परमेश्वर के बीच सब जगत् की अवस्था है।

इस प्रकार महर्षि के वचन से स्पष्ट है कि ओंकार परमेश्वर जहाँ शिव है, कल्याणकारी है, विश्वनाथ है, वहीं वह अन्न, अन्नाद व अत्ता स्वरूप वाला भी है। वह ही जगत् को बनाता है, और वह ही जगत् को समेटता भी है। सब लोक लोकानतर परमेश्वर में ही स्थित हैं उसके शासन में है, वह ही सबका धारक और संहारक है। परमेश्वर के धारक स्वरूप के साथ संहारक स्वरूप को जानना नितान्त आवश्यक है। ऐसा न हो मीठा-2 गप्प, कड़वा-2 थू। यदि परमेश्वर के अन्न=मीठे फल के साथ कटु=अन्नाद स्वरूप को नहीं समझा, तो जीवन पाप, अधर्म, अत्याचार, भ्रष्टाचार से सदा लिप्त रहेगा, छुटकारा नहीं होगा।

ईश्वर मुख से वेद में कहा है-

अहमन्नमन्नमदन्तमद्मि। साम. 594

अर्थात् अहम् अन्नम्=मैं अन्न हूँ, जीव मेरा ही सेवन करता है, मेरी ही उपासना करता है। इसके विपरीत जो केवल भोगों में फँस जाता है, नाना स्वादु अन्नों के खाने में लगा है उस-उस अन्नम् अदन्तम्=खाने वाले को अद्मि=खा लेता हूँ। मैं जहाँ शिव हूँ वहीं रुद्र हूँ। स्वादु अन्न में लगे अन्त में मात्र रोते हैं, भोगों में फँसना ठीक नहीं, भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता:, । अन्नपति, अन्नाद का ज्ञान ही लाभकारी है।

महर्षि ने शिवरात्रि पर्व के अवसर पर शिव, ओम् के अन्न, अन्नाद, अत्ता स्वरूप को जानने, समझने का प्रण लेकर जगत् की आँखें खोली हैं कि ईश्वर के सही स्वरूप को समझे। विश्वनाथ मन्दिर आदि में प्रतिष्ठित शिवलिंग, जगत्पति, विश्वपति, अन्नपति नहीं है, क्योंकि जो हाथ पैरा वाला है, वह सीमित है, तो अन्न, धन भी सीमित होगा, वह अन्नपति, विश्वनाथ नहीं हो सकता। विश्वनाथ, अन्नपति, जगत्पति ईश्वर तो वह असीम, निराकार स्वरूप वाला है। जो सबका है, सब में समाया है, सब से दूर भी है, सब के समीप भी है। वही विश्व है, विश्वनाथ है, अन्न का दाता है, मालामाल है, शिव है, ओम् है।

शिवभक्त! पहचानें कौन है मालामाल !!!

- आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, जिला- सिरोही - 307027 (राज.)

खेद व्यक्त

खेद है कि आर्य सन्देश के गत अंक दिनांक 27 फरवरी से 2 मार्च, 2013 प्रैस गड़बड़ी होने के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियों लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339 (श्री विजय आर्य)

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ...

स्वामी दयानन्द सरस्वती 19वीं सदी में न केवल एक महान समाज सुधारक हुए हैं अपितु आधुनिक समय में भी वे प्रेरणा के प्रकाश पुंज है। जिस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उस समय सोए हुए देश को जगाकर देश एवं धर्म की रक्षा की वैदिक संस्कृति को लुप्त होने से बचाया वह निश्चित रूप से आज के युवाओं के सामने एक मिसाल है। आज फिर देश को आवश्यकता है ऐसे नागरिकों की जो जिम्मेदारी के साथ राष्ट्र रक्षा व संस्कृति उत्थान के लिए आगे आयें। यह विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के 190वें जन्मोत्सव के विशेष अवसर पर आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 में आयोजित भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्ग दर्शन कार्यक्रम में रखें। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व कल्याण यज्ञ द्वारा किया गया।

आयोजित कार्यक्रम में मुन्जाल शोवा लिमिटेड के चैयरमेन श्री योगेश मुन्जाल मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि हमे संगठन को प्रेमभाव से और मजबूत करना होगा।

अमृतसर से पधारे प्रख्यात् गायक श्री दिनेश पथिक ने अपने सुमधुर भजनों से ऋषि दयानन्द के प्रति अपना अभिनन्दन व्यक्त कर उनके कार्यो और जीवन पर प्रकाश डाला तथा उससे प्रेरणा लेकर जीवन में आगे बढ़ने का आवाहन किया।

इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने बताया कि महाशय धर्मपाल जी की ओर से दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में 12 नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविरों के आयोजन की घोषणा की गई है, जो आर्यसमाज अपने क्षेत्र में इस शिविर का आयोजन कराना चाहे वे सभा के उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य से सम्पर्क करें।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के आजीवन सेवाव्रती अविवाहित कार्यकर्ताओं एवं विद्वानों के स्वयं के लिए तथा उनके माता-पिता के लिए आर्यसमाज की ओर से 9 लाख रुपये का मैडिकलेम बीमा नि:शुल्क कराया जाएगा। जो कार्यकर्ता/विद्वान इस सेवा का लाभ लेना चाहें वे सभा कार्यालय को अपना आवेदन भेजें। आवेदन भेजन के लिए आचार्य ऋषि देव जी से मो. नं. 9540040388 पर सम्पर्क करें।

इस अवसर पर विशेष रूप से तीन सन्देश दिए गए -

1. स्थान-स्थान पर जाकर वैदिक साहित्य का विक्रय करने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान करना।

2. आर्यसमाज के 85 वर्ष से अधिक आयु वाले बुजुर्गो का कार्यक्रम में सम्मान करना, जिन्होंने अपना जीवन आर्यसमाज व वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित किया है।

3. आर्यसमाज के आने वाले 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों का सम्मान करना।

इस समारोह में इन तीनों सन्देशों का बखूबी पालन भी किया गया।

समारोह मे पधारे समस्त बच्चों एवं युवाओं में आर्यसमाज एवं संस्कारों के बीजारोपण हेतु 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों को भी पीतवस्त्र, माल्यार्पण तथा बालोपयोगी साहित्य देकर सम्मानित किया गया। आर्यसमाज के साहित्य को विभिन्न स्थानों पर ले जाकर साहित्य बेचकर आर्यसमाज का प्रचार एवं अपनी अजीविका चलाने वाले साहित्य विक्रेता श्री माधव सिंह एवं श्री रवि प्रकाश को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2 के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं सर्वश्री कर्नल नन्दलाल जी, एच. सी. ठकराल जी, आर. एन. सलूजा जी, ओम प्रकाश वर्मा जी, श्रीमती विद्या मल्होत्रा जी एवं श्री पृथ्वीराज वर्मा जी को सभा की ओर से स्मृति चिह्न, शाल, पुष्पमाला एवं पीतवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया।

स्वामी दयानन्द के जन्मोत्सव के विशेष अवसर पर दिल्ली के आर्यवीरों का एक जत्थे को ओ३म् ध्वज दिखाकर रवाना किया गया। जो स्वामी जी की शिक्षाओं व राष्ट्रीय एकता का संदेश देशभर में प्रसारित करता हुआ स्वामी जी की जन्म भूमि टंकारा (गुजरात) पहुंचेगा। एवं 27 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव में भाग लेगा।

स्वामी दयानन्द के विचारों को प्रचारित-प्रसारित करने में आर्य समाज निरंतर कार्यरत है इसी उद्देश्य से विभिन्न जनमाध्यमों जैसे दैनिक हिन्दुस्तान (हिन्दी व अंग्रेजी), दैनिक जागरण, पंजाब केसरी आदि में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी जन्मोत्सव पर विभिन्न आर्यो समाजों द्वारा सामूहिक विज्ञापन प्रकाशित करवए गए। वहीं दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर एक विशेष वार्ता का सीधा प्रसारण हुआ जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार ने स्वामी जी के जीवन और कार्यो पर विस्तृत चर्चा की। जिससे देश-विदेश के लोगों ने स्वामी जी के विचारों एवं कार्यो के विषय में जाना।

इस विशेष अवसर पर हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिल्ली के अनेक आर्यसमाजों द्वारा मुख्य मार्गो एवं चौराहों पर स्टॉल लगाई गई जिन पर निरन्तर माइक के माध्यम से ऋषि गाथा व भजन चलाए जा रहे थे। स्टॉल के माध्यम से आम जनमानस तक पहुंचते हुए, स्वामी दयानन्द व उनके कार्यो तथा आर्यसमाज के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई साथ ही उन्हें महर्षि दयानन्द की सचित्र जीवनी, वैदिक साहित्य आदि भेंट किये गये।

इस भजन संध्या एवं प्रेरक मार्ग दर्शन कार्यक्रम में सभा के उपप्रधान धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, ओम प्रकाश आर्य, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 के प्रधान प्रियव्रत आर्य, सहदेव नांगिया ने भी प्रेरणादायी विचार रखे।

आर्यसमाज, एल-ब्लॉक, आनन्द विहार, हरि नगर ने मनाया
महर्षि दयानन्द सरस्वती का 190वां जन्म दिवस

आर्यसमाज, एल-ब्लॉक, आनन्द विहार, हरि नगर ने आज महर्षि दयानन्द सरस्वती का 190वां जन्म दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया। इस अवसर पर आर्यसमाज से बाहर निकल कर मुख्य फर्नीचर मार्केट, जेल रोड़ पर आर. के. स्टील कं. के पास बड़ा पांडाल लगा कर प्रात: 10:00 बजे आचार्य कुंवर पाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया जिसमें समाज के सभी सदस्यों के साथ जेल रोड़ पर स्थित दुकानदारों तथा शोरूम के मालिकों तथा कर्मचारियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। यज्ञ उपरान्त प्रसाद वितरण किया गया एवं माईक से ऋषि गाथा के साथ आ. कुंवर पाल जी ने ऋषि जन्म विषय पर लोगों को बताया। इस अवसर पर लंगर का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया एवं ऋषि की लघुजीवनी, मानव कल्याण के सूत्र, देव दयानन्द तथा अन्य ट्रैक्ट जेल रोड़ पर आने जाने वालों को बांटे गये तथा जेल रोड की दुकानों पर भी साहित्य बांटा गया। लगभग 2000 लोगों ने लंगर का लाभ लिया एवं वही खाने के पश्चात् अपने रिक्शा। रेहड़ी में बैठकर बड़ी तन्मयता से बांटे गये साहित्य को पढ़ा। कुछ राहगीरों (जो आर्यसमाज से परिचित थे) ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा कर कार्यकर्ताओं को उत्साहवर्धन किया। विशेष उल्लेखनीय बात यह थी कि लंगर बांटने में जेल रोड़ के मुख्य व्यवसायियों ने स्वयं पांडाल में आकर लंगर वितरण व्यवस्था सम्भाली एवं लंगर लेने वाली भीड़ को नियंत्रित करने में सहयोग दिया एवं भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजनों हेतु समर्थन एवं सहयोग का आश्वासन दिया। आने जाने वालों को असुविधा न हो इसलिए स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए समाज के सदस्यों ने डोने आदि एक जगह पर एकत्र करने के उद्देश्य से बड़ी-बड़ी थैलियां लेकर अनमें सब कुछ एकत्र किया जिससे आयोजन स्थल अन्त तक साफ बना रहा। यह कार्यक्रम दोपहर 2:30 पर समाप्त हुआ।

- महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज सूरजमल विहार, दिल्ली ने किया
महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सवपर यज्ञ एवं प्रसाद वितरण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 190वें जन्म दिवस पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार 24 फरवरी 2014 को प्रात: 9:00 बजे से आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली के बाहर मुख्य सड़क पर विशेष भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया। लगभग 100 व्यक्ति उपस्थित थे एवं सड़क से गुजरने वाले प्रत्येक राहगीर ने रुककर देखा। यज्ञ व भजनों के कार्यक्रम के पश्चात् डिप्टी मेयर निगम-श्री महेन्द्र आहूजा जी क्षेत्रीय विधायक श्री ओम् प्रकाश शर्मा एवं गिरी जी भी उपस्थित हुए।

इस अवसर पर देशी घी का 60 किलो हलवा 500 ब्रेड पकोड़े प्रसाद रूप में वितरित किए गए।

- अशोक गुप्ता, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैंडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभ्रंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-		
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

वर की आवश्यकता

आर्य कन्या, ब्राह्मण गौत्र पाराशर 25 वर्ष, 5'5'' वजन 50 किलो, रंग गोरा, सुन्दर सुशील, एम.सी.ए., एम.एन.सी. में सॉफ्टवेयर इंजीनियर (ट्रनी) कार्यरत, पिता हरियाण राज्य विभाग में लेखाधिकारी, माता बी.ए.बी.एड. घरेलू, भाई बीटेक (अन्तिम वर्ष) हेतु सुयोग्य, सुन्दर सुशील कार्य वर चाहिए। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें -

दिनेश कुमार आर्य, फरीदाबाद शहर
मो. 09968288806, 9868884665
Email : aryadk2013@yahoo.in

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 3 मार्च, 2014 से रविवार 9 मार्च, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6/7 मार्च, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 मार्च, 2014

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डीएवी प्रबन्धकृर्ती समिति, आर्यवीर दल, एवं टंकारा ट्रस्ट को अपनी सेवाएं देने वाले

आर्यसमाज के इतिहास के केन्द्र बिन्दु, सुप्रसिद्ध आर्यनेता

श्री रामनाथ सहगल जी का 90वां जन्मोत्सव समारोह

गुरुवार 13 मार्च, 2014

स्थान : आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

यज्ञ : सायं 4:30 बजे भजन एवं शुभकामनाएं : 5 से 7 बजे

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करें

निवेदक — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली एवं दिल्ली के आर्य संस्थानों के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

प्राप्ति स्थान — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

– सम्पादक

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का वार्षिकोत्सव समारोह

11-12-13 अप्रैल, 2014

आर्यसमाजें अपना आयोजन न रखें

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वार्षिकोत्सव हेतु बस यात्रा आयोजित की गई है। आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपना कोई कार्यक्रम इन तिथियों में न रखें जिससे आप भी इस समारोह में भाग ले सकें।

– सतीश चड्ढा मो. 9540014141

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर